P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-3* November- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उत्तर प्रदेश में प्रचलित व्रत एवं व्रतों के महत्व के संदर्भ में अध्ययन

सारांश

भारत में पर्व–त्यौहार मनाने की परम्परा बहुत पुरानी है, प्रायः प्रत्येक अवसर पर सुख–शांति के प्रतीकस्वरूप किसी न किसी प्रकार के उत्सव का आयोजन इस देश में अनादिकाल से होता आया है। हमारे हिन्दू धर्म में व्रत एवं त्योहार का विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति में पर्व, उत्सव एवं व्रतों की एक सुदीर्घ शास्त्रीय परम्परा है, जिसमें मुख्य रूप से आनन्द एवं उल्लास का समावेश है, इसीलिए भारत में पर्वोत्सव तथा व्रतों की विशेष प्रतिष्ठा है। यहाँ जीवन का प्रत्येक क्षण व्रत, उत्सव एवं पर्वो से परिपूर्ण है,। इसीलिए प्रत्येक मास में व्रत–पर्वोत्सव के विधि–विधान हमें प्राप्त होते है,। जो हिन्दु संस्कृति के मूलाधार है। आधुनिक युग में लोगो के लिए व्रत एवम् त्योहार केवल एक महोत्सव मनाने का एक मात्र कारण बन कर रह गये है। आधुनिक युग के नवयुग वर्ग के लोग अपने परम्परागत व्रत और त्योहार को भूलते जा रहे है। लोग इनके महत्व या कारणों से पूर्ण रूप से अनिभिज्ञ है। अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र के माध्यम से लोगो को उत्तर प्रदेश के प्रचलित व्रत तथा व्रतों के महत्व से अवगत कराने का प्रयास किया गया है।

दीपशिखा पाण्डेय
वरिष्ठ प्रवक्ता,
गृह विज्ञान विभाग,
च0 र0 दे0 आर्य महिला पी0 जी0 कालेज,
गोरखपुर

खुशबू त्रिपाठी
छात्रा,
गृह विज्ञान विभाग,
च0 र0 दे0 आर्य महिला पी0 जी0 कालेज,
गोरखपुर

मुख्य शब्द : भारतीय संस्कृति, भारतीय पर्व, उत्सव एवं व्रत।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में पर्व, उत्सव एवं व्रतों की एक सुदीर्घ शास्त्रीय परम्परा है, जिसमें मुख्य रूप से आनन्द एवं उल्लास का समावेश है। इन पर्वो से अज्ञान, दुःख, शोक और मोह की निवृत्ति होती है, तथा अखण्ड आनन्द की प्राप्ति होती है। इसीलिये भारत में पर्वोत्सव तथा व्रतों की विशेष प्रतिष्ठा है। यहाँ जीवन का प्रत्येक क्षण व्रत उत्सव एवं पर्वो से परिपूर्ण है। इसीलिये प्रत्येक मास में व्रत–पर्वोत्सव के विधि–विधान हमें प्राप्त होते हैं, जो हिन्दू संस्कृति के मूलाधार है। भारत में पर्व–त्यौहार मनाने की परम्परा बहुत पुरानी है, प्रायः प्रत्येक अवसर पर सुख–शांति के प्रतीकस्वरूप किसी न किसी प्रकार के उत्सव का आयोजन इस देश में अनादिकाल से होता आया है। हमारे देश में प्रायः प्रत्येक खुशी के अवसर को त्योहार के रूप में मनाने की परम्परा रही है। प्राचीनकाल में यज्ञ हुआ करते थे जो विभिन्न क्षेत्रों के उत्कर्ष को त्यौहार का रूप देकर प्रकृति के अभिवेदन सूचक थे। गांधी जी ने कहा है–इस भारतीय संस्कृति को बल देने के लिए हम समय– समय पर त्यौहार मनाते हैं। देखा जाय तो हमारे सारे पर्व–त्यौहार सार्थक ही नहीं वैज्ञानिक भी हैं–सभी समयानुकूल, प्रकृति की शुभांशसा में यज्ञ की गरिमा लिए हुए अनादिकाल से हम सारे पर्व–त्यौहार वैसे ही हर्षोल्लास के साथ मनाते आ रहे हैं। और इन त्योहारों में नए–नए त्योहार जुड़ते जाते हैं। स्वतन्त्रता–प्राप्ति के बाद कई राष्ट्रीय पर्व और त्यौहार इनमें सम्मिलित किए गए। इन त्योहारों का समावेश केवल इस उद्देश्य से नहीं किया गया कि ये हमारे जीवन के प्रकाश स्तम्भ हैं, बल्कि इसलिए कि आने वाली संततियों को अपनी विरासत का पता रहे, वे अपनी विरासत की कहानियाँ गर्वोन्नत होकर सुने–सुनाएँ, इनसे शिक्षा लें और इन्हें अपने जीवन में साकार करें।

व्रत, पर्व और उत्सव हमारी लौकिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के सशक्त साधन हैं, इनसे आनन्दोल्लासक साथ ही हमें उदान्त जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त होती है। भारतीय पर्वो के मूल में इसी आनन्द और उल्लास का पूर्ण समावेश है। दुःख, भय, शोक, मोह तथा अज्ञान की आत्यन्तिक निवृत्ति और अखण्ड आनन्द की प्राप्ति ही इन व्रत पर्वोत्सवों का लक्ष्य है। यही कारण है कि ये व्रत और पर्व प्राणी को अन्तर्मुख होने की प्रेरणा करते है। स्नान, पूजन, जप, दान, हवन तथा ध्यानादि कृत्य एक प्रकार के व्रत है। इनमें से प्रत्येक मनुष्य की बाह्य वृत्ति कॊ अन्तर्मुख करने में समर्थ है। व्रताचरण से मनुष्य को उन्नत

जीवन की योग्यता प्राप्त होती है। व्रतों में तीन बातों की प्रधानता है। 1– संयम –नियम का पालन, 2– देवाराधन तथा 3– लक्ष्य के प्रति जागरूकता। व्रतों से अन्तः करण की शुद्धि के साथ–साथ बाह्य वातावरण में भी पवित्रता आती है तथा संकल्पशक्ति में दृढ़ता आती है। इनसे मानसिक शान्ति और ईश्वर की भक्ति भी प्राप्त होती है। भौतिक दृष्टि से स्वास्थ्य में भी लाभ होता है। अर्थात रोगों की आत्यन्तिक निवृत्ति होती है। व्रतोपासना का महत्वपूर्ण स्वरूप है– ''एक भगवान ही समस्त विश्व– चराचर के रूप में अभिव्यत, है– यह समझ कर किसी का अपमान, अनिष्ट न करके, किसी को दुःख न पहुँचाकर, किसी का अहित न कर सदा सर्वदा अपनी सारी योग्यता, सारी शक्ति, सारी सम्पत्ति, सारी वुद्धि और सारा जीवन लगाकर मन–वाणी– शरीर से सबका सम्मान करना, सबका दुःख निवारण करना, सबको सुख पहुँचाना और सबका हित करना। धर्मशास्त्रों के अनुसार अपने वर्णाश्रम के आचार–विचार में रत रहने वाले, निष्कपट, निर्लोभी, सत्यवादी, सम्पूर्ण प्राणियों का हित चाहने वाले, वेद के अनुयायी, बुद्धिमान भक्ति तथा पहले से निश्रय करके यथावत कर्म करने वाले व्यक्ति ही व्रत अधिकारी होते है। उपर्युक्त गुण सम्पन्न ब्रह्मण , क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री और पुरुष– सभी व्रत के अधिकारी है। सौभाग्यवती स्त्री के लिये पति की अनुमति से ही व्रत करने का विधान है। यथा विधि व्रतों के समाप्त होने पर अपने सामर्थ्यानुसार व्रत का उद्यापन भी करना चाहिये। उद्यापन करने पर ही व्रत की सफलताहै।

''व्रत'' का आत्यात्मिक अर्थ उन आचरणों से है जो शुद्ध सरल और सात्विक हों तथा उनको विशेष मनोयोग तथा निष्ठापूर्वक पालन किया जाय। कुछ लोग व्यावहारिक जीवन में सत्य बोलने का प्रयास करते हैं। और सत्य का आचरण भी करते हैं, परन्तु कभी–कभी उनके जीवन में कुछ ऐसे क्षण आ जाते हैं कि लोभ और स्वार्थ के वशीभूत होकर उन्हें असत्य का आश्रय लेना पड़ता है। तथा वे उन क्षणों में झूठ भी बोल जाते हैं इस प्रकार वे व्यक्ति सत्यव्रती नहीं कहे जा सकते। अतः आचरण की शुद्धता को कठिन परिस्थितियों में न छोड़ना व्रत है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी प्रसन्न रह कर जीवन व्यतीत करने का अभ्यास ही व्रत है। इससे मनुष्य में श्रेष्ठ कर्मो के सम्पादन की योग्यता आती है, कठिनाइयों में आगे बढ़ने की शक्ति प्राप्त होती है, आत्मविश्वास दृढ़ होता है और अनुशासन की भावना विकसित होती है। आत्मज्ञान के महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रारम्भिक कक्षाव्रत पालन ही है। इसी से हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। व्रताचरण से मानव महान बनता है।

'व्रत' का तात्पर्य है– दृढ़ संकल्पपूर्वक मनसा–वाचा–कर्मणा किसी वचन, किसी भाव अथवा किसी क्रिया का सम्यक प्रकार से निर्वाह करना। व्रत के परिग्रह के समय उपासक अपने आराध्य अग्निदेव से करबद्ध प्रार्थना करता है– ''मैं नियमपूर्वक व्रत का आचरण करूँगा, मिथ्या को छोड़कर सर्वदा सत्य का पालन करूँगा।'' व्रत के समय में अल्पाहार करने से शरीर में हलकापन और चित्त की एकाग्रता अक्षुण्य रहती है। व्रती के लिए अनुष्ठान के समय मद्य, मांस प्रभूति निषिद द्रव्यों का सेवन तथा प्रातः काल एवं सायंकाल के समय शयन वर्ज्य है।

वैदिक काल की अपेक्षा पौराणिक युग में अधिक व्रत देखने में आते हैं। उस काल में व्रत के प्रकार अनेक हो जाते हैं। व्रत के समय व्यवहार में लाए जाने वाले नियमों की कठोरता भी कम हो जाती है तथा नियमों में अनेक प्रकार के विकल्प भी दखने में आते हैं। उदाहरण रूप में जहाँ एकादशी के दिन उपवास करने का विधान है, वहीं विकल्प में लघु फलाहार और वह भी संभव न हो तो फिर एक बार ओदनरहित अन्नाहार करने तक का विधान शास्त्रसम्मत देखा जाता है। इसी प्रकार किसी भी व्रत के आरचरण के लिए तदर्थ विहित समय अपेक्षित है। ''बसंते ब्राहमणोःग्नी नादधीत'' अर्थात् वसंत ऋतु में ब्राह्मण अग्निपरिग्रह व्रत का प्रारंभ करें, इस श्रुति के अनुसार जिस प्रकार वसंत ऋतु में अग्निपरिग्रह व्रत के प्रारंभ करने का विधान है वैसे ही चांद्रायण आदि व्रतों के आचरण के निमित्त वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण तक का विधान है। इस पौराणिक युग में तिथि पर आश्रित रहने वाले व्रतों की बहुलता है। नित्य, नैमित्तिक और काम्य, इन भेदों से व्रत तीन प्रकार के होते हैं। जिस व्रत का आचरण सर्वदा के लिए आवश्यक है और जिसके न करने से मानव दोषी होता है वह नित्यव्रत है। सत्य बोलना, पवित्र रहना, इंद्रियों का निग्रह करना, क्रोध न करना, अश्लील भाषण न करना और परनिंदा न करना आदि नित्यव्रत हैं। किसी प्रकार के पतन के हो जाने पर या अन्य किसी प्रकार के निमित्त के उपस्थित होने पर चांद्रायण प्रभृति जो व्रत किए जाते हैं वे नैमिक्तिक व्रत हैं।

जो व्रत किसी प्रकार की कामना विशेष से प्रोत्साहित होकर मानव के द्वारा सम्पन्न किए जाते है वे काम्य व्रत हैं,।

पुरूषों एवं स्त्रियों के लिए पृथक व्रतों का अनुष्ठान कहा है। कतिपय व्रत उभय के लिए सामान्य है तथा कतिपय व्रतों को दोनों मिलकर ही कर सकते हैं। श्रवण शुक्ल पूर्णिमा, हस्त या श्रवण नक्षत्र में किया जाने वाला उपाकर्म व्रत केवल पुरूषों के लिए विहित है। भाद्रपद शुक्ल तृतीया को आचारणीय हरितालिक व्रत केवल स्त्रियों के लिए कहा है। एकादशी जैसा व्रत दोनों ही के लिए सामान्य रूप से विहित है। शुभ मुहूर्त में किए जाने वाले कन्यादान जैसे व्रत दंपति के द्वारा ही किए जा सकते हैं।

व्रत–पर्वोत्सवों का महत्त्व

1. व्रती होकर अनवरत भाव से भगवान की ध्यान में लगे हुए सत्पुरूष सहज ही भगवदर्शन लाभ करते हैं।
2. एकादशी व्रत को पच्च ज्ञानेन्द्रिय, पच्च कमेन्द्रिय तथा मन– इन ग्यारह इन्द्रियों के संयम के रूप में भी देखा जा सकता है।
3. व्रत–पर्वोत्सवों के स्नान, पूजा, जप, तपस्या, दान और हवन आदि का मुख्य महत्व है।
4. व्रत करने वाली स्त्री प्रत पालनपूर्वक सत्यव्रती रहती है।

5. व्रतों के पालन से सत्याचरण में समर्थ करती है। इसका व्रत सिद्व तथा सफल होता है। जिससे वह असत्य को छोड़कर वह सत्य को प्राप्त करती है।
6. व्रत के ही आभ्यातमस्वरूप है। कई प्रकार के व्रत अनिर्वचनीय होते है, जो पति के जीवन के लिए स्त्रीयां रहती है।
7. व्रत सदाचार सम्पन्ना नारियों ने भारतीय मातृत्य के गौरव को बढ़ाया है।
8. षष्ठी व्रत माघ कृष्ण पक्ष की षष्ठी को महिलाएं करती है। आयु तथा संतान की कामना फलवती है। इसका महत्व अधिकतर बंगाल में है।
9. व्रतों में अमावास्या को भी विशेष महत्व दिया गया है।
10. व्रत में उपवासादि के साथ आत्मसंयम की प्रधानता होती है।
11. दैनिक चर्या के नित्य नैमित्तिक एवं काम्य कर्मो में प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जीवन का व्रत पर्वोत्सवों से सम्पन्न होना अत्यावश्यक है।
12. व्रत धर्म का साधन माना गया है।
13. व्रत के आचरण से पापों का नाश, पुण्य का उदय, शरीर और मन की शुद्धि, अभिलाषित मनोरंजन की प्राप्ति और शांति तथा परम पुरूषार्थ की सिद्धि होती है।
14. व्रतों में सूर्य पर्व भी एक महान पर्व माना जाता है। मानसिक तथा शारीरिक व्यथा के विनाश के लिए तथा उत्तम गति एवं सद्बुद्धि के लिये यह पर्व किया गया है।
15. व्रत घर का त्योहार घर–'बाहर का और पर्व तीर्था का अनुष्ठान होता है।
16. व्रत पर्व एवं त्योहार सुख–'सौभाग्य के जनक, आयु, आरोग्य के संरक्षण तथा परमात्मा की प्रसन्नता के प्रतीक हैं।
17. पितृश्रादुपर्व के अवसर पर देश–विदेश से आगत हिन्दुओं का जनसंकुल एक अनिर्वचनीय शोभा एवं श्रद्धा उत्पन्न करता है।
18. त्योहार में पूजनादि के साथ उत्सव समारोह, अधिक होते है। जप, पूजा उत्सव कुछ न्यनाधिक भाव से तीनों में देखे जाते हैं।
19. व्रत–पर्वोत्सव में जिनका विश्राम है। तथा जिनको सत्य के आचरण की व्यसन है, वे ही वास्तव में मनुष्य है।
20. संसार के समस्त धर्मो ने किसी न किसी रूप में व्रत और उपवास को अपनाया है।

अध्ययन का उद्देश्य

उत्तर प्रदेश में प्रचलित व्रत एवं व्रतों के महत्व के संदर्भ में अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

डॉ0 हरिप्रसाद दूबे (2010) हरितालिका व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाने वाला स्त्रियों का प्रमुख पर्व है। यह व्रत नारी के सौभाग्य की रक्षा करता हैं। हरितालिका व्रत के संबध में ऐसी आस्था है कि भगवान शिव को पति स्वरूप में प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम पार्वती जी ने यह व्रत किया था। उसी समय से यह व्रत स्त्रियों द्वारा सुख अक्षय सौभाग्य की लालसा के लिए आरम्भ कर दिया गया। भाद्रपद तृतीय को निर्जला व्रत रहकर स्त्रियां शाम को तिल के पप्ते से सिर भीजकर नए वस्त्रों और आभूषणों को धारण करती है घर की लिपाई – पुताई करके केले के खंभे गाड़कर तोरण पत्राकाओं से मंडप बनाया जाता है। चौकी पर शंकर पार्वती को स्थापित कर विशेष रूप से शंकर पार्वती के पार्थिव पूजन की परंपरा है।

डॉ0हरिप्रसाद दूबे (2010) धार्मिक दृष्टि से, व्रत सौभाग्य प्रदायक और मंगल दाता है। ब्रह्म (शिव की ओर अग्रसर होने से सांसारिक विभुति (विष्णु) उधर से हटाने का प्रयत्न् करती है किंतु पूर्ण निश्चय पर दृढ़ रहने पर मानव की सखी 'बुद्धि' की सहायता से मनोरथ सफल हो जाता है। हरितालिका व्रत करने वाली स्त्रियों को व्रत में पूर्ण निष्ठा अनिवार्य है,। व्रत की कथा सुनने से सौभाग्य मिलता है, इस व्रत की महत्ता के विषय में वर्णित है, कि जैसे नक्षत्रों मे चन्द्रमा ग्रहों में सूर्य, वर्णो में विष, देवों में विष्णु, नदियों में गंगा पुराणों में महाभारत, वेदों में सामवेद तथा इन्द्रियों में मन श्रेष्ठ है, इस प्रकार सभी व्रतों में हरितालिका का व्रत श्रेष्ठ है।

नवभारत टाइम्स अगस्त (2012) भारत वर्ष में ईसा पूर्व एवं पश्चात व्रतों की व्यवस्था प्रचलित जी। कुछ व्रत ब्रह्मचारियों के लिए और कुछ सनातनी धर्मावलंबियों के लिए निशिचित थे। अशैाच अवस्था में व्रत नहीं करना चाहिए। जिसकी शारीरिक स्थिति ठीक न हो व्रत करने से उत्तेजना बढ़े और व्रत रखने पर व्रत भंग होने की संभावना हो उसे व्रत नहीं करना चाहिए। व्रत में व्रत करते समय निमोक्त दस गुणों को होना आवश्यक है। क्षमा, सत्य, दान शैाच, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, अग्रिहवत, संतोष एवं अस्तेया।

देवल के अनुसार (2012) ब्रहम्चर्य शौच सत्य एवं अभिषमर्दन नामक चार गुण होने चाहिए। व्रत के दिन मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। पतित पाखंडी तथा नास्तिकों से दूर रहना चाहिए और असत्य भाषण नही करना चाहिए। उसे साखिक जीवन का पालन और प्रभु का स्मरण करना चाहिए साथ ही कल्याणकारी भावना को पालन चाहिए।

धर्म डेस्क उज्जैन (.2012) चंद्रोदयव्यापिनी चतुर्थी तिथि को भगवान श्री गणेंश के लिए जो व्रत किया जाता है उसे गणेंश चतुर्थी व्रत कहते है जो भी यह व्रत करता है, भगवान श्री गणेंश उसकी हर इच्छा पूरी करते हैं।

श्री जयदेव भाई शुक्ला (2012) इस तरह के धार्मिक उपवास के रूप में विषयों को आम तौर पर व्रत कहा जाता है। अनुशासन अपने आप में एक व्रत है। कुछ नियमों को स्वीकार करने के लिए जीवन में किसी भी उन्नति के लिए हम कुछ प्रतिबंधक विषयों को स्वीकार करना होगा एक नदी के किनारें से बाध्या है, पेड़ पृथ्वी के लिए बाध्य है, सितार के तार भी बाध्य कर रहें है। और इस तरह के संगीत का उत्पाद किया जाता है हिमादरी व्रत अध्याय का सार मन में कुछ लक्ष्य रखतें हुए और इसके बारे मे एक प्रस्ताव है जिससे एक विशेष उपक्रम के रूप मे व्रत वर्ण न करता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में व्रत है कि नियामक निरीक्षण करने के लिए हमारी

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-3* November- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

इंद्रियों के सुख के ऊपर एक पवित्र वरत नियंत्रण लागू करने के लिए करते है।

गणेश रस्तोगी (2012) अग्नि पुराण में कहा गया है कि व्रत करने वालो को प्रतिदिन स्नान करना चाहिए सीमित मात्रा में भोजन करना चाहिए और देवों का सम्मान करना चाहिए। विण्णु धर्मी पुराण मे व्यवस्था है कि जो व्रत उपवास करता है उसे इष्ट देव के मंत्रों को मौनजप करना चाहिए उनका ध्यान करना चाहिए उनकी कथाएं सुनानी चाहिए और उनकी पूजा करनी चाहिए। इसमे होम योग एवं दान के महत्व को समझाया गया है। जिसकी शारीरिक स्थिति ठीक न हो व्रत करने से योजना बढें और व्रत रखनें पर व्रत भंग होने की संभावना हो उसे व्रत नहीं करना चाहिए। व्रती में व्रत करते समय निम्नोक्त दस गुंणों का होना आवश्यक है क्षमा, सत्य, दया, दान शौच, इन्दिय निग्रह, देव पूजा, अग्नि, हवन, संतोंष एवं अस्तेय।

पं0 केवल आनंद जोषी (2013) धर्म सिंधु ने व्रत को पूजा आदि से संबंधित धार्मिक कृत्य माना है। अग्नि पुराण में कहा गया है कि व्रत करने वालों को प्रतिदिन स्नान करना चाहिए, सीमित मात्रा में भोजन करना चाहिए। विष्णु धर्मोत्तर पूराण में व्यवस्था है, कि जो व्रत–उपवास करता है, उसे इष्ट देव के मंत्रों का मौन जप करना चाहिए, उनका ध्यान करना चाहिए उनकी कथाएं सुननी चाहिए और उनकी पूजन करनी चाहिए इसमें होम, योग एवं दान के महत्व को समझाया गया है। व्रतों में कम प्रयास से अधिक फलों की प्राप्ति होती है, व्रतों में इसी लोक में रहते हुए पुण्य फल प्राप्त हो जाते है।

नव भारत टाइम्स (2013) व्रत शब्द की उत्पत्ति (वृत्त वरणे अर्थात वरण करना या चूनना) से मानी गई। श्रृग्वेद से वृत शब्द का प्रयोग इस प्रकार हुआ है, 'संकल्प' आदेश विधि निर्देष्टि व्यवस्था वशता आज्ञाकारिता सेवा स्वामित्व व्यवस्था निर्धारित उत्तराधिकार वृत्ति आचारिक कर्म प्रवृत्ति में संलग्रता रीति धार्मिक कार्य उपासना कर्तव्य अनुष्ठान धार्मिक तपस्या उत्तम कार्य आदि। वृत से ही व्रत की उत्पत्ति मानी गई है। श्रद्धालु एवं भक्तगण देवों के अनुग्रह की प्रप्ति के लिए अपने आचरण या भोजन को नियंत्रित करके उपवास रखते है। व्रत को दैवी आदेश या आचरण संबंधी नैतिक विधियों के अर्थ में लिया जाता है।

राकेश अमर उजाला, दिल्ली (2015) पूरे साल होने वाले षष्ठी व्रत में कार्तिक कृष्ण षष्ठी और चैत्र शुक्ल षष्ठी का बड़ा महत्व है। स्कंद पुराण में इसे स्कंद षष्ठी और संतान षष्ठी कहा गया है। इस पुराण में कहा गया है, कि इस व्रत से संतान सुख की प्राप्ति होती है। संतान की आयु और स्वास्थ्य के लिए भी यह व्रत उत्तम माना गया है।

सामग्री एवं विधि

हमारे हिन्दू धर्म में व्रत एवं त्योहार का विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति में पर्व, उत्सव एवं व्रतों की एक सुदीर्ध शास्त्रीय परम्परा है। तथा लोग या आधुनिक युग के नवयुग वर्ग के लोग अपने परम्परागत व्रत और त्योहार को भूलते जा रहे है। तथा यह लोग इनके महत्व या कारणों से पूर्ण रूप से अनिभिज्ञ है। अतः लोगो को व्रत तथा व्रतों के महत्व से अवगत कराने हेतु उत्तर प्रदेश में मनाये जाने वाले कुछ प्रमुख व्रतों का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है।

मकर संक्रान्ति

पौष या माद्य मास में 14 जनवरी को सूर्य मकर राशि पर आ जाता है। इस दिन को मकर संक्रान्ति प्रवेश अवधि अथवा संक्रान्ति कहते है । यह पर्व सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से भी अपना विशेष महत्व रखता है। इस दिन गंगा– यमुना या अन्य तीर्थ स्थानों पर स्नान करके दान आदि देना धार्मिक दृष्टि से श्रेयस्कर समझाा जाता है। मकर संक्रान्ति के एक दिन पूर्व सफेद तिल, काले तिल, भुने हुए तिल, आटे एवं मूंग की दाल के लड्डू बनाये जाते है। बालक–बालिकाएँ व महिलाएँ प्रेम–भाव से मेंहदी रचाकर संक्रान्ति का सत्कार करते है। घर का सारा वातावरण आमोद प्रमोदमय दृष्टिगोचर होता है। संक्रान्ति के दिन प्रातः मूँग,–चावल बनाते है। जिसे आदर साहित ब्राहमणों और अपंग–अपाहिजों में सेवा–भाव से बाँटा जाता है।

मकर संक्रान्ति के 300 नेग हैं, जिन्हें, बड़ी सावधानी से निभाया जाता है। लड़की की ससुराल में तिल के लड्डू, मिठाई , मेवे एवं श्रद्धानुसार वस्त्र आदि भेजे जाते है। देवर को भाभी स्नेह पूर्वक घेवर खिलाती है, देवर भाभी को चूड़ियाँ दान करता है, भाभी अपनी ननद को आदर–सम्मानपूर्वक से भोजन कराती है, तथा उसे श्रद्धानुसार दान देती है, सास अपनी बहुओं को वस्त्र एवं आभूषण दान करती है। बहू अपने ससुर व ज्येष्ठ के पाँव लगती है, उन्हें, हार्दिक सम्मान देती है। ससुर व ज्येष्ठ बहू को आर्शीवाद देते है बहू उन्हे, जलेबी व दही, खिलाती है। कन्याओं का विशेष ध्यान रखा जाता है। उन्हे, मान–सम्मान सहिल मिठाई एवं वस्त्र प्रदान किये जाते है

बसंत पंचमी

यह उत्सव ऋतुराज वसंत की आगवानी में माघ सुदी पंचमी को मनाया जाता है किसानों के घर में लक्ष्मी का आगमन हो जाता है। और चैत की बुआई के साथ–साथ उनके परिश्रम का फल भी मिलने लग जाता है। उसी दिन प्रकृति धानी साड़ी पहनकर, फूलों से लदकर मोहक, और मादक रूप धारण करती है। किसानों के घर में अगहनी धान की फसल लक्ष्मी के रूप में तैयार रहती है, और इस पर आर्थिक चिंताओं से मुक्त होकर तथा परिक्षम के परिहार की दृष्टि से ऋतुराज के मादक आगमन कृषक उत्फुल्ल हो जाता है, और खुलकर के फाग खेलता है, यह पर्व उस समय आरम्भ हुआ, जब भारत सम्पन्न था और ऋतुराज के आगमन पर भोग–विलास में समय बिताने का मौका भारतवासियों को मिलता था। ऐसा कहा जाता है, कि यह, पर्व मौर्य के समय में शुरू और गुप्तकाल आते–आते लोकप्रिय उत्सव बन गया। आज भी यह पर्व पंजाब, बिहार और बंगाल में खूब धूमधाम के साथ मनाया जाता है इसी दिन कृषक अपने हल की पूजा करता है नये वर्ष की खेती का अभियान करता है। उस समय अगहनी की फसल हो जाती है। इस प्रकार खेती के समस्त कार्यो से उन्मुक्त किसान प्रकृति के साथ वितरण करता है,` बसंत पंचमी

के दिन हम लोग पीत पठ धारण करके नये अन्न का उपभोग करते हुए आनंद और उल्लास मनाते है, एवं सरस्वती की पूजा करते है। भारत का विद्यार्थी समुदाय इस पर्व को अपना विशेष पर्व मानता है।

विजयादशमी

विजयादशमी के समय कई प्रकार की पूजा होती है, जिसमें नवरात्र–पूजा,दुर्गा–पूजा और शस्त्र–पूजा महत्वपूर्ण है, यदि हम विचार करे तो साफ पता चलता है, कि इन तीनों प्रकार के पूजन का संबंध शक्ति, से है, इसलिए यह स्पष्ट है कि विजयादशमी का मुख्य उद्देश्य 'शक्ति' की प्रतीक दुर्गा माता की आराधना और उपासना है। इनकी पूजा इसलिए भी की जाती है कि अतीत में इस देवी ने दृष्ट दानवों ाक वध करके सामान्य जन और धरती को उधमियों से मुक्त किया जाता है। 'शिव पुराण' में कहा गया है, इस दशमी तिथि को विजया, महाशाक्ति का विधिपूर्वक आराधना–अनुष्ठाता किया जाता है। उस देवी को जो सभी देवों और दानवों के लिए दुर्जेया है, तथा दुर्गा विनाशिनी है। यह भी कहा जा सकता है, भारतीय इतिहास और पुराण में विजयादशमी की चर्चा अनेक रूपों में मिलती है कहा जाता है कि इसी तिथि को पूरूषोत्तम श्री राम ने दुर्गा की पूजा करके आततायी रावण पर विजय प्राप्त की, इसलिए यह तिथि विजयादशमी के नाम से जानी गयी कई जगह लोग विजयादशमी को 'दशहरा' के नाम से जानते है। इसके पीछे तर्क यह है कि महाविद्याओं और इंद्रियो की संख्या दस ही है, तथा दुर्गा माता की आराधना और उपासना करके इन दसों महाविद्याओं और इंद्रियों पर विजय प्राप्त किया जा सकता है। कुछ लोग इसे दशहरा इसलिए भी कहते है कि रावण के दसमुख थे, जिसका गर्व हरण भगवान राम ने इसी दिन किया था– अर्थात दस पापों को हरने के कारण इस दिन का नाम दशहरा पड़ गया ये दस पाप है,–**असमर्थता, आत्मवंचकता, अकर्मण्यता, दीनता, भिरुता परमुखपेक्षिता, षिथिलता, संकीर्णता, स्वार्थपरता और पागलपन।** रावण के दसों सिर में दस पाप विद्यमान थे, और राम ने इस दसों सिरों को काटकर इन पापों का अंत किया था। इसलिए यह पर्व दशहरा के नाम से भी जाना जाता ळें

शरद पूर्णिमा

शरद उत्सव एक महत्वपूर्ण उत्सव है। इस उत्सव का हमारे धर्म और संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है। प्राचीन काल से सूर्य, चन्द्रमा और इन्द्र आदि को देवताओं के रूप में स्वीकार करके उनकी पूजा की जाती रही है। चन्द्रमा के प्रति धार्मिक भावनाएं भी उच्चकोटि की है। आज भी अनेक उत्सव एवं व्रत चन्द्रमा से सम्बन्धित किए जाते है, और चन्द्रमा की पूजा करके नारियाँ अपनी मनोकामनाओं के पूर्ण होने की आशा करती है।

शरद पूर्णिमा ऋतु–परिवर्तन का प्रतीक है। इस दिन से वर्षा ऋतु की समाप्ति और शरद का प्रारम्भ माना जाता है। इसका सम्बन्ध हमारे कृषक जीवन से बहुत गहरा है। बिना किसी भेद–भाव के सभी इस दिन उत्सव मनाते है।

करवा चौथ

करवा चौथ कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चौथ को मनाई जाती है। सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए यह चौथ का व्रत बड़ा सौभाग्यशाली और महत्वपूर्ण दिन होता है पतिव्रता स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घ आयु की शुभकामना की भावना से ही यह महत्वपूर्ण व्रत करती है। इस दिन चतुर ग्रहणी चावलों को पीसकर दीवार पर करवा चौथ बनाती है जिसे वर कहा जाता है इस दिन करवा चौथ में पति के अनेकानेक रूप बनाये जाते है, तथा सुहाग की अनेक वस्तुएं जैसे चूड़ी, बिन्दी, बिछुआ, मेंहदी, महावर आदि बनाती है इसकी अतिरिक्त दूध वाली गाय, करवा बेचने वाली कुम्हारी, महावर लगाने वाली नाइन, चूड़ी पहिनाने वाली मनिहारिन, सात भाईयों की इकलौती बहन सूर्य, चन्द्रमा, शिव, और पार्वती आदि देवी देवताओं के चित्र बनाये जाते है। साधक स्त्रियों को इन दिन निर्जल तथा निराहार व्रत रखना चाहिए। रात्रि को जब चन्द्रमा उदय हो उसके प्रकाश में चन्द्रमा को अर्घ्य देकर ही भोजन करना चाहिए पीली मिट्टी की गौस की प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा करनी चाहिए। रात्रि को जब चन्द्रमा निकल आये तो चन्द्रमा को अर्ग देकर बाद में भोजन कर ले। प्राचीन काल में एक करवा नाम की स्त्री महान पतिव्रता थी, जो अपने पति के साथ नदी के किनारे एक गाँव में रहती थी। एक दिन उसका पति नदी में स्नान करने को गया। दैव योग से स्नान करते समय वहाँ एक मगर ने उसका पैर पकड़ लिया। तब वह मनुष्य करवा–करवा करके अपनी पत्नी को चिल्ला–चिल्ला कर पुकारने लगा। अपने पति की आवाज को सुनकर उसकी पतिव्रता स्त्री करवा भागी हुई चली आई और उस पतिव्रता ने आते ही मगर को कच्चे सूते के धागे से बांध दिया। मगर को बांधकर वह अपने पतिव्रत धर्म के बल से यमकलोक में पहुंचकर यमराज से बोली हे भगवान मेरे पति को मगर ने पकड़ लिया है इस अपराध में आप अपने बल से मगर को नर्क में डाल दो। करवा की यह बात सुनकर यम बोले कि अभी मगर की आयु शेष है अतः मैं अभी उसको नहीं मार सकता यमराज की बात सुनकर करवा बोली यदि ऐसा नहीं करेंगे तो मैं आपको श्राप देकर नष्ट कर दूँगी करवा की यह बात सुनकर यमराज भयभीत हो गया अन्ततः उस पतिव्रता के साथ जाकर उस मगर को यमलोक को पहुंचा दिया और उसके पति को दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया। उसी दिन से ये करवा चौथ मनाई जाती है और व्रत रखा जाता है ।

भैया दूज

यह पर्व कार्तिक सुदी दूज को मनाया जाता है। भाई–बहन के स्नेह को बढ़ाने वाला एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सर्वाधिक प्रचलित त्यौहार है । जो भाई–बहन यम द्वितीया के दिन इस प्रकार दूज पूजन के बाद तिलक की रस्म पूरी करने के बाद भोजन करती है वे मुक्त हो जाते है, उन्हें मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। इस दिन यमराज की बहन यमुना जी ने अपने भाई यमराज को तिलक करके भोजन कराया जाता था इसलिये इस दिन को यम द्वितीया कहा जाता है। इस दिन बहन दूज बनाकर भाई को पूज, हल्दी, अछत, रोली का तिलक करे, तिलक करने के बाद भाई को फल मिठाई खाने को दे। भैया–दूज के दिन मथुरा में 'विश्रान्तघाट' पर एक बहुत बड़ा धार्मिक मेला लगता है। इसदिन लाखों भाई–बहन स्त्री–पुरुष यमुनाजी में स्नान कर यमपाश से मुक्त होते

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-3* November- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

है तथा पुण्य लाभ प्राप्त करते है। इसदिन इसीलिए मथुरा में आकर 'विश्राम घाट' पर स्नान करके भाई–बहन दीपक, जलाते हैं यमुना जी को दीपक, पुष्प,दूध तथा भोग चढ़ाते है। यम और यमुना भागवार सूर्य की संतान है। दोनो भाई–बहनों में अतिशय प्रेम था। परन्तु यमराज यमलोक की शासन व्यवस्था में इतने व्यस्त रहते है कि यमुनाजी के घर ही न जा पाते। एक बार यमुना जी यम से मिलने आयी बहन को आया देख यमदेव बहुत प्रसन्न हुए और बोले–बहन! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ, तुम मुझसे जो भी वरदान माँगना चाहो, माँग लो! यमुना ने कहा, भैया, आज के दिन जो मुझसे स्नान करें, उसे यमलोक न जाना पड़े। यमराज ने कहा–बहन! ऐसा ही होगा। उस दिन कार्तिक शुक्ल द्वितीय थी। इसीलिए इस तिथि को यमुना स्नान का विशेष महत्व है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीय तिथि को यमुना ने अपने घर अपने भाई यम को भोजन कराया और यमलोक में बड़ा उत्सव हुआ, इस लिए इस तिथि का नाम 'यमद्वितीया है।

गणेश चतुर्थी

गणेश चतुर्थी व्रत करने वाला प्राणी सूर्योदय से पहले उठ भगवान गणेश जी का स्मरण करती है। फिर शौचदि निप्य कर्म से निवृत होकर स्नान ध्यान करके गणेश जी के मंदिर जाती है। और वहां कथा सुन फिर रात को व्रत स्त्रियाँ अपने छत पर चन्द्रमा भगवान निकलने का इंतजार करती है। व्रत स्त्रियाँ जहाँ उसे पूजा करना है वहा पर वह एक चौक बनाती है। उस चौक में गोबर के गौरी–गणेश का एक छोटा प्रतीक बनाती है। गौरी–गणेश के प्रतीक के पास वह धूप, दीपक, पुष्प, कलश, गंगा जल, अक्षत, मृदुफल, रोली, फल तिल का मोदक, अदरक, काला गाजर, पान का पत्ता आदि चढ़ाकर पूजा करती है। पूजा समाप्त होने के पश्चात् जब चन्द्रमा भगवान निकलते है तो व्रतस्त्रियाँ उन्हें, देख अपने पुत्र से दूध का अर्ध्य अपने हाथ पर देने को कहती है। जब यह प्रक्रिया समाप्त हो जाता है, तब माता अपने पुत्र को काला तिल, अदरक और गुड़ का प्रसाद देती है । जब यह पूजा समाप्त हो जाता है तो व्रत स्त्रियाँ अपने घर में जा कर सबसे पहले कुछ कथा सुनाती है। फिर वह अपना व्रत खोलने के लिए गंजी,दूध और गुड़ का सेवन कर व्रत खोलती है ।

कृष्ण जन्माष्टमी

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को रात के बारह, बजे मथुरा नगरी के कारागार में वसुदेव जी की पत्नी देवकी के गर्भ से पोडश कला सम्पन्न भगभाव श्री कृष्ण का अवतार हुआ था। साधारणतया इस व्रत के विषय में दो मत है। स्मार्त लोग अर्थ रात्रि का स्पर्श होने पर या रोहिणीन, नक्षत्र का योग होने पर सप्तमी सहिल, अष्टमी में भी उपवास करते है, किंतु वैष्णलोग सप्तमी का किंचित मात्र स्पर्श होने पर द्वितीय दिवस ही उपवास करते है। निम्वार्क सम्प्रदायी वैष्णव तो पूर्व दिन अर्थरात्रि से यदि कुछ पल भी सप्तमी अधिक हो तो भी अष्टमी को न करके नवमी में ही उपवास करते है। शेष वैष्णवों मे उदयव्यपिनी अष्टमी एवं रोहिणी, नक्षत्र को ही मान्यता एवं प्रधानता दी जाती है। इस दिन भगवान का प्रादुर्भाव होने के कारण यह, उत्सव मुख्यतया उपवास जागरण एवं विशिष्ट रूप से श्री भगवत की सेवा–क्षृगारादिका है। दिन में उपवास और रात्रि मे जागरण एवं योजनालब्ध उपचारों में भगवान का पूजन, भगवत, कीर्तन इस उत्सव के प्रधान आधार है। व्रज(मथूरा–वृन्दावन) में यह उत्सव बडे विशिष्ट ठंग से मनाया जाता है। इस दिन केले के खम्भे, आम अजवा अशोक के पल्लव आदि से घर का द्वार सजाया जाता है, दरवाजे पर मंगल–कलश एवं मुसल स्थापित कर रात्रि में भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति अथवा शालग्राम जी को विधिपूर्वक पटनामृत से स्नान कराकर षोडशोपचार से विष्णुपूजन किया जाता है।। **'ऊँ नमों भगवते वासुदेवाय'** इस मन्त्र से पूजन कर तथा अर्थात अर्धरात्रि के समय जबकि अज्ञान रूपी अन्धकार का वस्त्रालय आदि से सृसज्जित करके भगवत को सुन्दर सजे हुए हिंडोले में प्रतिशिष्ट कर धूप, दीप और अगरहित, त्रैवेध तथा प्रसूति के समय सेवन होने वाले सुस्वाद जायकेदार नमकीन पदार्थो एवं उस समय उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के फल, पुष्पों और नारियल, छुहारे, अनार, बिनौर, पंजीरी, नारियल के मिठाई तथा नाना प्रकार के मेवे का सजाकर श्री भगवान को अर्पण किया जाता है। दिन में श्रमवाद की मूर्ति के सामने बैठाकर कीर्तन तथा भगवान का गुणमान किया जाता है। और रात्रि के बारह, बजे गर्भ से जन्मटेन्स के प्रतीक स्वरूप खीरा फोडकर भगवान जन्म कराया जाता है एवं जन्मोष्टम मनाया जाता है। जन्मोष्टम के पश्चात कर्पूरादि प्रज्वलित कर समवेत स्वयं से भगवत की आरती स्तृति कर, पश्च्यात प्रसाद वितरण किया जाता है। हाज में पुष्प, तुलसीदास लेकर आह्वान कर औसत प्रदान कर कहा जाता है,– 'हे' जगप्पते। हे, जगन्नाथ। हे, पुरूषोत्तम। अपने पार्षदों एवं भगवती देवी संहिता वैकुण्ठ से अंवतरित होकर यहाँ पर विराजे। इस प्रकार सपरिवार प्रभु को आसन देकर पोश्शोपनारविधि से पूजा–अर्चना करें। पच्चामूल एवं दुग्धाभिषेक साथ माता देवकी सहित, श्री बालक कृष्ण को विविध श्रमरादिक वस्तुओं से विशेष रूप से अवमुक्त करे विशेषर्थ्य प्रदान पूर्वक धूप, दीप, त्रैवेध, नीरज की सेवा सम्पादन करके पुष्पान्जलि अर्पण करें ।

अहोई अष्टमी व्रत

यह व्रत कार्तिक लगते ही अष्टमी को किया जाता है जिस वार की दीपावली होती है, अहोई आठे भी उसी वार की पड़ती है। इस व्रत को वे स्त्रियाँ करती है, जिनकी सन्तान होती है बच्चों की माँ दिनभर व्रत रखती हैं। सायंकाल को अष्ट कोष्ठक की अहोई की पुतली रंग भरकर बना दे। उसी पुतली के पास सेई तथा सेई के बच्चों के चित्र बनायें या बाजार से छपा हुआ अहोई आठे का चित्र मंगाकर दीवार पर लगा ले और उसका पूजन सूर्यास्त पश्चात् अर्थात् तारो के निकलने पर करें परंतु अहोई माता का पूजन करने से पहले पृथ्वी को पवित्र करके चौक पूरकर और एक लोटे में जल भरकर पटरे पर कलश के रूप में रखकर पूजन करें। तत्पश्चात् अहोई माता की कहानी सुने। पूजा के लिए चांदी की अहोई (स्याऊ) बनवाये। उसमें चांदी के दो मणिक डलवायें। व जिन्हें दाने या मोती भी कहते है। जिस प्रकार हार में पैन्डिल लगा होता है उसी प्रकार अहोई (स्याऊ) और दाने डलवाये। फिर अहोई माता की रोली चावल, दूध व भात

से पूजा करे और जल से भरे लोटे पर सतिया बना लो एक कटोरी में हलवा तथा रूपये का बायना निकालकर रख ले और सात गेहूँ के दाने हाथ में लेकर और गले में अहोई (स्याऊ) को डालकर कर अहोई माता की कहानी सुने जो बायना निकाल कर रखा है उसे सासू जी के चरण स्पर्श करके मस्तक झुकाकर आदर पूर्वक उन्हें दे दे। तत्पश्चात् चन्द्रमा को अर्क देकर के भोजन करें। दीवाली के बाद किसी शुभ दिन अहोई को गले से उतार कर गुड़ से भोग लगाये और फिर जल के छीटे देकर मस्तक झुकाकर उसे रख दें फिर जितने पुत्र हो उतनी ही बार तथा जितने बेटो को विवाह, हो गया हो उतनी–उतनी ही बार चांदी के दो दाने उसमें डलवाऐं जाय ऐसा करने से अहोई देवी प्रसन्न होकर बच्चों को दीर्घायु करके घर में नित्य नए मंगल करती है। इस दिन ब्राह्मणों को पेठा दान देने से विशेष फल की प्राप्ति होती है।

बहुरा

बहुरा व्रत करने वाला प्राणी सूर्योदय से पहले उठे और भगवान गणेश जी का स्मरण कर शौचादि नित्य कर्म से निवृत होकर स्नान करके गणेश जी के मंदिर जाती है और वहां कथा सुनती है ।फिर रात को व्रत स्त्रियाँ अपने छत पर चन्द्रमा भगवान का निकलने का इंतजार करती है। व्रत स्त्रियाँ वही बैठ कर अपना पूजा–पाठ करती है और भगवान गणेश जी से पुत्र के दीर्घ आयु के लिए मनोकामना करती है। पूजा समाप्त होने के बाद जब भगवान चन्द्रमा निकलते है तो वह पुत्र से अर्ध्य देने को कहती है। जब यह प्रक्रिया समाप्त हो जाता है तब व्रत स्त्रियाँ कथा कहती है। कथा समाप्त होने के बाद व्रत स्त्रियाँ अपना व्रत खोलने के लिए वह रात में रोटी और दूध का सेवन करती है।

सूर्यषष्ठी– महोत्सव (छठ)

यह व्रत कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी का उल्लेख स्कन्द–षष्ठी के नाम से किया गया है। इस व्रत का प्रसाद माँग कर खाने का विधान है। सूर्यषष्ठी–व्रत के प्रसाद में ऋतु–फल के अतिरिक्त आटे और गुड़ से शुद्ध घी में बने 'ठेकुआ' का होना अनिवार्य है, ठेकुआ पर लकड़ी के सांचे से सूर्य भगवान के रथ का चक्र भी अंकित करना आवश्यक माना जाता है। सभी व्रती महिलाएँ नवीन वस्त्र एवं आभूषणदिकों से सुसज्जित होकर फल, मिष्ठान और पववात्रो से भरे हुए नये बांस से निर्मित सूप और दौरी (डलिया) लेकर षष्ठी माता और भगवान सूर्य के लोकगीत गाती हुई अपने–अपने घरो से निकलती है। पुनः ब्राहम्मुर्हुत में ही नूतन अर्ध्य सामग्री के साथ सभी व्रती जल में खड़े होकर हाथ जोड़े हुए भगवान भास्कर के उदयाचला होने की प्रतीक्षा करती है। जैसे ही भास्कर जी दिखायी देते है, वैसे ही मंत्रों के साथ भगवान को अर्ध्य समर्पित करती जाती है सूर्यषष्ठी–व्रत के अवसर पर सायंकालीन प्रथम अर्ध्य से पूर्व मिट्टी की प्रतिमा बनाकर षष्ठी देवी का आवाहन एवं पूजन करती है।

हरतालिका व्रत

हरतालिका व्रत करने वाला प्राणी सूर्योदय से पहले उठे और भगवान शंकर जी का स्मरण करे फिर शौचादिनिष्य कर्म से निवृत होकर स्नान ध्यान करके शिवालय में जाय जहां पर कथा सुननी हो तथा पूजन करना हो अगर हो सके तो वह अपने आप ही मन्दिर में शिव पार्वती पूजन के लिए केले में बन्दखार इत्यादि अनेक पुष्प मालाओं से सुसज्जित एक सुन्दर मण्डप तैयार करे जिसमें स्वयं बंधु बन्धुओं सहित बैठ श्रद्धा सहित अपने आचार्य अथवाविद्वान पंडित को बुलाकर उन्हें आसन पर बिढ़ाए तब हाथ में कुशा और जल लेकर ओम अघोह इत्यादि से श्री शिव पार्वती जी का ध्यान कर आगच्छ देवि मंत्र द्वारा आवाहन करे शिवे शिव प्रिये मंत्र सेपाघ दे संसार ताप मंत्र से अर्ध्य दे राज सौभाग्य के मंत्र द्वारा आचमत करावे। तत्पश्चात स्वर्ण की बनी पार्वती की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करावे और फिर मन्दाकिनी मंत्र से शुद्ध जल से स्नान करावे। ब्रह्म युग्म मंत्र द्वारा वस्त्रों का जोड़ा अर्पण करे चन्दन मंत्र द्वारा चन्दन लगाये। रजिते मंत्र से अक्षत (चावल) चढ़ा दे त्यांत्व ज्यातिमंत्र पढ़ कर दीपक जलाये। नैवेघ मंत्र से नैवेध अर्पण करे। इंद फल मंत्र से फल अर्पण करे। पुंगी फल मंत्र को पढ़ कर पान का बीडा अर्पण करें । सौभाग्य मंत्र के द्वारा प्रार्थना करे।

जीवित पुत्रिका व्रत

व्रती को चाहिए कि सूर्य निकलने से पहले उठकर सर्वप्रथम भगवान का ध्यान करे व उसके बाद शौचादि स्नान तथा संध्या–पूजन आदि से निबटकर उस स्थान पर जाये जहां उसे जीमूतवाहन जी का पूजन करना हो व उनकी कथा सुननी हो, उस पौधे के पास (अरियार बरियार) जाये जहां पूजा करना है उसे सजावे। इसी स्थल पर वे अपने आत्मीय बन्धुजनों के साथ बैठकर अपने गुरू हेतु स्वच्छ उत्तम आसन बना देवें। तदुपरान्त हाथ में जल व कुश को ले ऊँ अधेव्यादि से अहंकारिण्ये तक का संकल्प वाक्य पढ़कर मन से संकल्प करे उसके बाद हाथ में फूल अक्षतादि लेकर मन्दारमाला नामक मंत्र के उच्चारण से जीमूतवाहन जी को ध्यावे 'चन्दन' नामक मंत्र से चन्दन का टीका लगावे। रंजिते इस मंत्र से अक्षत चढ़ावे।

ऋषि पच्चमी व्रत

भाद्रपद मास शुक्लपक्ष की पच्चमी को मध्याह के समय निर्मल जलवादी नदी आदि पर जाकर अपामार्ग के एक सौ आठ या सात काष्ठो में दतुवन करे। ''आयुर्बलम्'' इस मंत्र से वनस्पति की प्रार्थना कर, ''मुखदुर्गन्धिति'' मंत्र से दन्त धावन करे। इस प्रकार दांतो को साफकर शरीर में मृत्तिका धारण कर जल से स्नान करे। तदनन्तर ब्रहाकूर्चविधि से पच्चगव्य तैयार कर प्राशन करे। देशकाल का उच्चारण कर 'शरीर करिण्ये' इस संकल्प को पढ़ ताम्रादि पात्र में 'गायत्री मंत्र' से गोमूत्र, 'गन्ध द्वारा, इस मंत्र से गोमय,'आप्यायस्व इस मंत्र से दूध, 'दधि काष्ण' इस मंत्र से दधि, 'तेजोजसि इस मात्र से घृत,यज्ञ का काष्ठ से प्रणवोच्चारण पूर्वक आलोडित कर इसी से मंथित करे, प्रणव से अभिमंत्रित कर सात हरी कुशाओं से पंच्चगव्य को उठाकर 'इरावती' इत्यादि मंत्रो से दश आहुति अलग–अलग कर हवन करे। हवन से अवशिष्ट पच्चगव्य का प्रणव सहित 'ऊँ यत्वगस्थि' इस मंत्र का को पढ़कर प्राषन करे। यदि हवन करने की रूचि न हो तो पूर्व कथित मंत्रो का उच्चारण कर पच्चगदा का प्राशन

करे, परन्तु स्त्रियाँ मंत्र बिना पढ़े ही पच्चगव्य का प्राशन करें। नदी आदि में स्नान और नैमित्रिक कर्म करने के पश्चात् ब्राहम्णी, क्षत्रिया, वैश्या और शूदा भी अपने घर जाकर सुन्दर वेदी बना कर उसे गोबर से लीप कर, उस पर मागडलिक द्रव्यों से सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर कण्ठदेश में सुन्दर वस्त्र से सुशोभित, छिद्ररहित सजल ताम्र या मृतिका के कुम्भ को स्थापित कर, उसको फल, गन्धाक्षत सहित पच्चरन्त, सुवर्ण से आच्छादन से परिपूर्ण और वस्त्र से आच्छदित ताम्र पटल या मृत्तिका के पात्र आदि पर अषृदल कमल का निर्माण कर भक्तिपूर्वक सप्त ऋषियों की पूजा करे।

निष्कर्ष

हमारे हिन्दू धर्म में व्रत एवं त्योहार का विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति में पर्व, उत्सव एवं व्रतों की एक सुदीर्ध शास्त्रीय परम्परा है, जिसमें मुख्य रूप से आनन्द एवं उल्लास का समावेश है। इसीलिये भारत में पर्वोत्सव, तथा व्रतों की विशेष प्रतिष्ठा है। यहाँ जीवन का प्रत्येक क्षण व्रत, उत्सव एवं पर्वो से परिपूर्ण है। इसलिए प्रत्येक मास में व्रत–पर्वेत्सव के विधि–विधान हमें प्राप्त होती है जो हिन्दू संस्कृति के मूलाधार है। आधुनिक युग में लोगों के लिए व्रत एवं त्योहार केवल एक महोत्सव मनाने का एक मात्र कारण बनकर रह गये है। आधुनिक युग के लोग अपने परम्परागत व्रत और त्योहार को भूलते जा रहे है। तथा यह लोग इनके महत्व या कारणो ंसे पूर्ण रूप से अनिभिज्ञ है। धार्मिक दृष्टि से व्रत सौभाग्य प्रदायक और मंगलदाता है। इसमें व्यक्ति के अन्दर ब्रह्मचर्य, शौच, सत्य एवं अभिषमर्दन नामक चार गुण होना चाहिए। व्रत के दिन मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। पतित, पाखंड़ी तथा नस्तिकों से दूर रहना चाहिए और असत्य भाषण नहीं करना चाहिए। मुख्य रूप से तीन प्रकार के व्रत प्रचलित है, नित्या, नैमित्तिक और कायम नित्य वे व्रत है, जो भक्तिपूर्वक भगवान की प्रसन्नता के लिए निरंतर कर्तव्य भाव से किए जाते है। किसी निमित्त से जो व्रत किए जाते है, वे नैमित्तक व्रत कहलाते है। विशेष कामना को लेकर जो व्रत किए जाते है, वे काम्य व्रत कहे जाते है। सभी प्रकार के व्रतों में मानस व्रत अहिंसा, सत्य, अस्तेय तथा व्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गौड़, माया कालाण. करवा चौथ–व्रत–कथा : माया काला पुस्तक भण्डार, लव कुश गली, दिल्ली, 2008.*
2. *गौड़, वेदाचार्य दौलतराम. ऋृषि पच्चमी–व्रत–कथाः श्री ठाकुर प्रसार पुस्तक भण्डार, कचौड़ी गली, वाराणसी, 2008.*
3. *गौड़, माया काला. अहोई अष्टमी–व्रत कथा : माया काला पुस्तक भण्डार, लव कुश गली, दिल्ली, 2008*
4. *तिवारी, पंडित ओम प्रकाश. हरतालिका तीज व्रत कथा : 1347 गली अम्बे वाली फराशरवाना दिल्ली, 2008*
5. *नाटाणी, नारायण प्रकाश . हमारे त्योहार और उत्सव किताबः मेन रोड, गाँधी नगर, दिल्ली, 2009.*
6. *नाटाणी, नारायण प्रकाश. हमारे त्योहार और उत्सव किताबः मेन रोड, गाँधी नगर, दिल्ली, 2010.*
7. *नाटाणी, प्रकाश नारायण . हमारे त्योहार और उत्सव : किताबघर, मेन रोड, गाँधी नगर , दिल्ली , 2013.*
8. *नाटाणी, नारायण प्रकाश. हमारे त्योहार और उत्सवः किताबघर, मेन रोड, गाँधी नगर, 2014.*
9. *प्रसाद, श्री ठाकुर. गणेश चतुर्थी व्रत (बहुरा) व्रत कथाः श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ी गली ,वाराणसी, 2001.*
10. *प्रसाद, श्री ठाकुर. भैया दूज व्रत कथाः श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ी गली ,वाराणसी, 2001*
11. *व्रत पर्वोत्सव–अंक, (87) जनवरी सन् 2004 ई0 संख्या 1, गीता प्रेस, गोरखपुर,*